इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम

से मुतअ़ल्लिक़

चौदह सवालात

नामे किताब : इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से मुतअ़ल्लिक़ चौदह सवालात

तर्जुमा : एसोसीएशन आफ़ इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम

नाशिर : एसोसीएशन आफ़ इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम

सने इशाअ़त : १४३६ हि.

हदिया : ३० रुपये

फेहरिस्त

इब्तेदाइया.....५

सवाल १

अक़ीदए इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम से मुराद क्या है और उसका आग़ाज़ कब से हुआ?.....८

सवाल २

दूसरे अदियान-ओ-आसमानी किताबों में इमाम महदी मौऊद अ़लैहिस्सलाम को कैसा बताया गया है?.....१०

सवाल ३

क्या क़ुरआने मजीद में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर और वजूद पर दलील पाई जाती है? १४

सवाल ४

क्या पैग़म्बरे अकरम स़ल्ललाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम ने हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के बारे में ख़बर दी है? १८

सवाल ५

क्या अह्ले सुन्नत की किताबों में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के वजूद, ज़हूर और सीरत के बारे में ह़दीसें बयान हुई हैं?..... २५

सवाल ६

तारीख़ के दामन में महदवीयत का झूठा दअ़्वा करने वाले कौन लोग थे? ... २८

सवाल ७

क्यों इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम जब क़ाएम लिया जाता है तो तमाम शीअ़याने अह्लेबैत खड़े हो जाते हैं? ३०

सवाल ८

अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम और इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के दरमियान क्या शबाहत पाई जाती है? ३३

सवाल ९

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दगी की मुख़्तसर तारीख़ क्या है? ३६

सवाल १०

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की वेलादत पर क्या दलील है? क्या वेलादत के बअ़्द किसी ने आँहज़रत को देखा है? ३७

सवाल ११

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने अपने बाबा की शहादत के बअ़्द दुश्मनों की कसरत के बावजूद अपने आप को क्यों ज़ाहिर किया?..... ४१

सवाल १२

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की वेलादत के ह़ालात और शराएत क्या थे? ..४३

सवाल १३

जनाब नरजिस ख़ातून और इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम में क्या रिश्ता है?.. ४७

सवाल १४

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम, लक़ब और कुनियत क्या है? ५५

इब्तेदाइया

मोह़तसिब और मोअ़्तरिज़ अज़हान के लोगों की कसरत है। इसमें बड़े बड़े शहसवाराने तह़रीर-ओ-तकरीर भी हैं। मुतवस्सित़ दर्जे के वोह लोग भी है जो क़लमकार हैं और अपनी अक़्ल भर सोच बिचार की रोशनी में फ़ैस़ला कर लेते हैं। और एक बड़ी जमाअ़त उन लोगों की है जो अपने अफ़्कार के ज़ावियों की तश्कीलात में हमा वक़्त मस़रूफ़ रहते है और बात़िल की तब्लीग़ात से बहुत ज़्यादा मुतास्सिर हैं। और हर शीशे के तराशे हुए नगीने को हीरा साबित करने में अपना पूरा ज़ोर लगाते हैं लेकिन बयाबान के ग़ुम गश्ता राह को कभी मंज़िल नस़ीब नहीं होती और बौखलाहट या ह़ैरानी के अ़लावा उनके हाथ कुछ नहीं आता इसी तरह़ अव्वलुज़्ज़िक्र गरोह भी हक़ीक़त और हक़ से दूर होते चले जाते हैं।

ज़रा देखिये तो सही इब्ने ख़लदून को इमाम महदी अ़ज्जलल्लाहो तआ़ला फ़रजहुश्शरीफ़ के बारे में इस लिए इश्काल है कि आप (अ़.स.) का ज़िक्र स़ह़ीह़ बुख़ारी में नहीं है जबकि रेसालत मआब स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की पेशीनगोई पर जमहूरे इस्लाम का इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि आप (स.अ़.) के बारह जानशीन होंगे और वोह सब के सब औलादे फ़ातेमा से होंगे और बारहवाँ जानशीन महदी अ़लैहिस्सलाम होंगे जो इस दुनिया को अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से इस तरह भर देंगे जिस तरह़ ये दुनिया ज़ुल्म-ओ-जौर से भरी होगी। इस तरह़ आख़री ज़माने की और भी अ़लामतें ऑहज़रत स.अ़. ने बयान फ़रमाई हैं। जलालुद्दीन सुयूत़ी ने इस पेशीनगोई के तह़त तो कमाल कर दिया। आप लिखते हैं उन बारह जानशीनाने पैग़म्बरे इस्लाम में चार ख़ुलफ़ाए राशेदा हैं चार बनी उमय्या से हैं और दो बनी

अ़ब्बास से जबकि दो का इल्म नहीं है। जब बारहवाँ जानशीन पैदा होगा तो वोह आख़री ज़माना होगा और वोह इस दुनिया को अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से भर देगा। एक और मशहूर ह़दीस जिस पर जमहूरे इस्लाम का इत्तेफ़ाक़ है और वोह येह कि जो अपने ज़माने के इमाम को पहचाने बग़ैर मर जाएगा वोह जेहालत की मौत मरेगा। ऐसी अह़ादीस-ओ-रवायात का झुठलाना तो मुश्किल अम्र है हाँ जिसे अटकल लगाना कहते हैं वोह तो मुमकिन भी है और आसान रास्ता भी है। या कम से कम बात़िल को ह़क़ साबित करने के लिए ज़ोर ज़ोर से ढोल तो पीट ही सकते है ताकि इस शोर-ओ-ग़ोग़ा में किसी मज़्लूम की फ़रियाद सुनाई न दे "जो कहता है कहाँ है वोह फ़रज़न्दे रसूल (स.अ़.) जो ज़ुल्म-ओ-जौर को जड़ से उखाड़ फेंकेगा।" इस लिए कि येह नाला-ओ-फ़रियाद आख़री ज़माने के सितम ज़दग़ान, और मुस्तमंदान के सरपरस्त हुज्जत इब्निल ह़सन के वजूदे अक़दस का पता देते हैं। यही नहीं बल्कि **"क़द तबय्येनर्रुश्दो मिनल ग़य्ये"** की तफ़सीर भी बयान करते हैं। अफ़सोस इस बात का है कि अग़यार से क़त़्अ नज़र अपनों के दरमियान से भी शक-ओ-शुब्हात का रंग लिए जुम्ले सुनाई देते हैं।

आईनए क़ल्ब पर पड़ी ऐसे शुकूक की गर्द को साफ़ करने के लिए बिल्ख़ुसूस़ और मोअ़्तरेज़ीन के सवालात के जवाब देने के लिए बिल्उमूम इस किताब को लिखने की ज़रूरत को पूरा किया गया है ताकि हुज्जत तमाम हो जाए। इस पुर आशोब ज़माने में जहाँ फ़ित्ना-ओ-फ़साद उ़र्यानी और बरहनगी के साथ हर मोड़ पर रक्सा़ँ है उनसे दामनकश रहना और अपने नफ़्स को बचाए रखना उसके लिए मुमकिन-ओ-मुआ़विन साबित हो और रहबरे ह़क़ीक़ी जो इमामे वक़्त है उसकी मअ़्रेफ़त में कमी न आने पाए।

दुनिया की ज़िंदगी चंद रोज़ा है। येह अपने माह-ओ-साल गुज़ार कर ख़त्म हो जाएगी लेकिन आख़ेरत में उसके अअ्माल का हिसाब होगा जिससे कोई नहीं बचेगा और यक़ीनन ख़ैर तो उसी के साथ होगा जिसके सर पर बक़ीयतुल्लाह की ख़ुशनूदी की चादर तनी होगी।

ऐ अल्लाह तबारक व तआला! वोह ज़ात जो तेरी आख़री हुज्जत है उस पर हमारे ईमान-ओ-ईक़ान को आख़री साँस तक क़ाएम रखना। आमीन, सुम्मा आमीन।

सवाल १

अक़ीदए इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम से मुराद क्या है और उसका आग़ाज़ कब से हुआ?

जवाब:

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर का अ़क़ीदा मुशरिकों, यहूदियों, ईसाइयों, मजूसियों, मुसलमानों और दूसरे अदियान में ज़िक्र हुआ है इस मअ्ना में कि आख़री ज़माने में एक इस्लाह़ करने वाला ज़ाहिर होगा जो ज़ुल्म, ख़यानत, तअ़स्सुब, जैसे दूसरे तमाम उ़यूब को इन्सान के दरमियान से मिटा देगा।

हाँ हज़रत इमाम महदी **अ़लैहिस्सलाम** का अ़क़ीदा न सिर्फ़ इस्लामी अ़क़ीदा है बल्कि अअ्ला मक़ासिद की तकमील, इन्सानी आर्ज़ू के पूरे होने, मज़्लूम और सितम रसीदा अफ़राद के दिल की वोह आवाज़ है जो आ़लमी अ़क़ीदे की असास पर अक़्साए आ़लम में गूँज रही है। चुँनाचे सारे मज़ाहिब के दरमियान हज़ार इख़्तेलाफ़ के बावजूद तमाम लोगों ने पहचान लिया है कि एक दिन वअ्दए इलाही पूरा होने वाला है और वोह इन्सान जिसका वअ्दा किया गया है वोह आकर रहेगा। और उसके ज़हूर से दीने इलाही का अ़ज़ीम मक़सद हासिल होगा और इन्सानियत अपने तकामुल की मंज़िल की तरफ़ चल पड़ेगी। इस बेना पर हज़रत इमाम महदी **अ़लैहिस्सलाम** का अ़क़ीदा एक दीरीना अ़क़ीदा है जिसकी जड़ें हर मज़हब में पाई जाती हैं।

अगरचे क़ुरआन के अ़लावा तमाम आसमानी किताबें तह़रीफ़ हो चुकी हैं उसके बावजूद कुछ जुम्ले उन ख़ाएन हाथों से मह़फ़ूज़ रह गए है जिसमें महदी मौऊ़द, मुसलेह़े जहानी के बारे में ख़बर दी गई है। चूंकि येह बातें पेशीनगोई की स़ूरत में बयान की गई है और इसका मौज़ूअ् क़ुरआन और ह़दीस में तवातुर से बयान हुआ है इससे पता चलता है कि उन बातों का सरचश्मा ज़बाने वह़ी (वह़्य) है ख़ाएन मोवर्रेख़ीन के दस्तबुर्द से मह़फ़ूज़ रही हैं। वोह मुतावातिर अह़ादीस जिनमें इमामे ज़माना **अ़लैहिस्सलाम** के ज़हूर का वअ़्दा किया गया है उनमें पैग़म्बर अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही वसल्लम की ह़दीस है जिसमें ऑह़ज़रत (स.अ.) ने फ़रमाया:

अगर दुनिया की उ़म्र में एक दिन से ज़्यादा बाक़ी न होगा, अल्लाह तआ़ला उस दिन को इतना तूलानी कर देगा ताकि मेरी उम्मत और ख़ानदान से एक मर्द जिसका नाम मेरा नाम और जिसकी कुनियत मेरी कुनियत होगी ज़ाहिर हो और ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इन्स़ाफ़ से भर दे जिस तरह़ ज़ुल्म और सितम से भर गई है।

सवाल २

दूसरे अदियान-ओ-आसमानी किताबों में इमाम महदी मौऊद अ़लैहिस्सलाम को कैसा बताया गया है?

जवाब:

अदियान-ओ-मज़ाहिब की किताबों में तलाश-ओ-जुस्तुजू के बअ़्द इस यक़ीनी नतीजे पर पहुँचते हैं कि महदी मौऊ़द का अ़क़ीदा मुसलमानों से मख़्सूस़ नहीं है बल्कि अदियान-ओ-मज़ाहिब इस अ़क़ीदे में मुसलमानों के शरीक हैं, ग़ौर करें।

१. किताब ज़िन्द, में जो ज़र्तुश्तियों की मज़हबी किताब है ज़ुल्म-ओ-फ़साद के ख़ात्मा और स़ालेहीन की वेरासत के सिलसिले में आया है

अह्रेमन का लश्कर हमेशा यज़दान के लश्कर के साथ ज़मीन के सिलसिले में बरसरे पैकार है और अ़ाम त़ौर से कामियाबी अह्रेमनियों को होती है लेकिन इस तरह नहीं कि यज़दान नाबूद हो जाएँ और ज़मीन पर उनकी नस्ल बाक़ी न रहे क्योंकि तंगी और सख़्ती के वक़्त (और मज़्द) ख़ुदा के आसमान से यज़दान को जो इसी की औलाद है मदद पहुँच जाती है और उनकी जंग नौ हज़ार साल तक चलती रहेगी और उस वक़्त एक बड़ी कामियाबी यज़दान को ह़ासि़ल होगी और अह्रेमनी सफ़ह़ए हस्ती से मिट जाएँगे तमाम ज़मीन और आसमान से अह्रेमन का इक़्तेदार ख़त्म हो जाएगा यज़दान की कामियाबी

और अह्रेमन की मुकम्मल तबाही के बअ्द दुनिया अपनी सआदत की तरफ़ रवाँ दवाँ हो जाएगी और आदम की औलाद सआदत-ओ-कामियाबी के तख़्त पर मुतमक्किन होंगे।

"जामसब नामा" नामी किताब में ज़िक्र हुआ है कि

"ताज़यान की ज़मीन से बनी हाशिम की नस्ल से एक मर्द ज़ाहिर होगा जिसका सर बड़ा, अज़ीमुल्जुस्सा, बड़ी पिंडली, और अपने जद के दीन पर होगा। अ़ज़ीम लश्कर के साथ ईरान की तरफ़ रुख़ करेगा और ज़मीन को आबाद और अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से भर देगा....."

दूसरी जगह पर ज़िक्र हुआ है

"अ़ज़ीम नजात देने वाला दीन को दुनिया में फैलाएगा, फ़क्र और तंगदस्ती का नाम-ओ-निशान मिटा देगा, यज़दान को अह्रेमन के हाथों से नजात देगा दुनिया के लोगों में गुफ़्तार-ओ-किरदार और फ़िक्री इन्क़ेलाब लाएगा।"

२. हिन्दुस्तान के मदारिक 'शाकमुनी' किताब में जो हिन्दुस्तान के हिन्दुओं के रहबरों में से है और उसके मानने वालों के अ़क़ीदे के मुताबिक़ वोह ख़ुद पैग़म्बर और साहेबे आसमानी किताब है वोह दुनिया के रूहानी पेशवा और परचमदार के बारे में कहता है कि

"उस ज़माने में एक दीन होगा (बादशाहत और दुनिया की हुकूमत और सल्तनत सय्यदे दो जहाँ के फ़र्ज़न्दे अर्जुमन्द किशन पर आकर ख़त्म होगी) वोह मशरिक़ और मग़रिब के पहाड़ों को हुक्म देगा और बादलों पर सवार होगा फ़रिश्ते उसके नौकर होंगे जिन्न और इन्स उसके ख़िदमत गुज़ार होंगे सूडान जो ख़ते इस्तवा के नीचे है अर्ज़े तर्स्ईन जो कुत्बे शुमाली

के नीचे है और समन्दर के उस पार भी उसकी हुकूमत होगी और अल्लाह का दीन एक दीन हो जाएगा और दीने ख़ुदा ज़िन्दा-ओ-जावेद हो जाएगा और सारी दुनिया पर 'ला इलाहा इल्लल्लाह' का परचम लहराएगा और लोग अल्लाह की मअ़्रेफ़त से सरशार होंगे।"-[1]

और किताब वेद जो हिन्दुओं के नज़दीक आसमानी किताब मानी जाती है उसमें बयान हुआ है:

"दुनिया की तबाही-ओ-बरबादी के बअ़्द आख़री ज़माने में एक बादशाह ज़ाहिर होगा जो काएनात के सारे लोगों का रहबर होगा और उसका नाम 'मन्सूर' होगा वोह तमाम काएनात पर हुकूमत करेगा और सारी दुनिया के लोगों को एक मज़हब पर कर देगा मोमिन और काफ़िर में हर शख़्स को पहचानता होगा और ख़ुदा जो चाहेगा उसे अन्जाम देगा।"

३. ईसाइयों की किताब 'इंजील' में है

"अपनी कमर को बांधे हुए अपने चिराग़ को रोशन रखो और तुम उन लोगों में हो जाओ जो अपने आक़ा का इन्तेज़ार कर रहे हैं कि कब बारात लेकर वापस आएगा ताकि जब भी आए और दरवाज़ा खटखटाए फ़ौरन दरवाज़ा खोल दो मुबारक हो उन लोगों को कि जब वोह आएगा तो वोह बेदार होंगे.... पस तुम भी तैयार रहो। इसलिए कि वोह ऐसे वक़्त आएगा जिसका तुम्हें गुमान भी नहीं है।"[2]

---

[1] अदियान-ओ-महदवीयत अज़ मोहम्मद बेहिश्ती, स़.१८

[2] इंजीले लूक़ा, फ़स़्ल १२, बंदहाए ३५-३६

४. यहूदियों की किताब "तौरेत" में है

"दाने से पौधा निकल आया है और शाख़ें उसकी जड़ों से निकलने वाली है और अल्लाह की कुदरत उस पर जल्वा फ़ेगन होगी.... मिस्कीनों के साथ अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ करेगा और मज़्लूमों के लिए रूए ज़मीन पर हक़ के साथ फ़ैस़ला करेगा.... बकरी भेड़िये के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेगी और शेर भेड़ के साथ रहेगा और तमाम जानवर इस तरह एक साथ रहेंगे कि एक बच्चा उन्हें हँका कर लाएगा.... ज़मीन का कोई गोशा किसी को कोई नुक़स़ान नहीं पहुँचाएगा क्योंकि ज़मीन अल्लाह की मअ़्रेफ़त से पुर होगी।"[1]

५. जनाब दाऊद अ़लैहिस्सलाम की किताब "ज़बूर" में है:

"शर और शरीरों का ख़ात्मा होगा और अल्लाह का इन्तेज़ार करने वाले ज़मीन के वारिस होंगे आगाह हो जाओ कुछ दिनों में बुरे लोगों का दौर ख़त्म हो जाएगा और वोह अपनी जगह पर ग़ौर करेंगे और वोह उस जगह पर न होंगे। और गुस्सा पीने वाले ज़मीन के वारिस होंगे....और वोह हमेशा के लिए उनकी हो जाएगी।"[2]

---

[1] तौरात, अशइयानबी, फ़स़्ल ११, बंदहाए १-१०

[2] अह्दे अ़तीक़, किताब मज़ामीर, मज़मूर ३७,बन्देहाइए ९-१२,१७,१८

सवाल ३

क्या क़ुरआने मजीद में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर और वजूद पर दलील पाई जाती है?

जवाब:

बहुत से ऐसे मसाएल हैं जिनका वाज़ेह तज़केरा क़ुरआने करीम में नहीं है जैसे नमाज़ की रकअ़तों का ज़िक्र मगर येह मौज़ूअ् उन मौज़ूआत में है जिसका बा क़ाएदा तज़केरा क़ुरआने मजीद में मौजूद है। बहुत सी आयतें इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की हुकूमत के बारे में हैं जिसका ज़िक्र हमारे बहुत से बुज़ुर्गों ने अपनी मोअ़्तबर किताबों में किया है। अ़ल्लामा मजलिसी ने अपनी गरांक़द्र किताब बेहारुल अनवार में एक बाब उन आयतों से मख़्सूस किया है जो इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर और क़याम के बारे में तावील की गई हैं। हम यहाँ पर नमूने के तौर पर चंद आयतें पेश करते हैं:

१. व लक़द कतब्ना फ़िज़्ज़बूरे मिम बअ़्दिज़्ज़िक्रे अन्नल अर्ज़ा यरिसोहा एबादेयस़्सालेहून।

गुज़श्ता आसमानी किताबों के बअ़्द हमने हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की किताब ज़बूर में लिख दिया है कि ज़मीन के वारिस हमारे स़ालेह़ बन्दे होंगे। इससे मुराद इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम और उनके अस़्हाब हैं।[1]

---

[1] सूरए अंबिया, आयत १०५

२. होवल्लज़ी अर्सला रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल हक़्क़े लेयुज़्हेरहू अ़लद्दीने कुल्लेही व लौ करेहल मुश्रेकून।

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को दीने हक़ और हेदायत के साथ भेजा ताकि दीने हक़ तमाम अदियान पर ग़ालिब आए गरचे येह बात मुशरिकों को नागवार क्यों न हो।[1]

इमाम रज़ा अ़लैहिस्सलाम से नक़्ल हुई रवायत के मुत़ाबिक़ येह आयत इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के बारे में है वोह ऐसे इमाम हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला तमाम अदियान और मज़ाहिब पर कामियाबी अ़त़ा करेगा।

३. वअ़्दल्लाहुल्लज़ीना आमनू मिन्कुम व अ़मेलुस़्सालेहाते ल यस्तख़्लेफ़न्न हुम फ़िल अर्ज़े कमस्तख़्लफ़ल्लज़ीना मिन क़ब्लेहिम, व लयोमक्केनन्ना लहुम दीनहुमुल्लज़िर्तज़ा लहुम व ल योबद्देलन्नहुम मिम बअ़्दे ख़ौफ़ेहिम अम्ना, यअ़्बुदूननी ला युश्रेकूना बी शैआ, व मन क-फ़-र बअ़्-द ज़ालेका फ़ऊलाएका हुमुल फ़ासेक़ून।

खुदा वन्द मुतआ़ल ने ईमान और अ़मले स़ालेह करने वालों से येह वअ़्दा किया है कि उन्हें रूए ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाएगा बिल्कुल उसी तरह जैसे उससे पहले ख़लीफ़ा बनाया है और उनके लिए मुन्तख़ब दीन को मज़बूत़ कर देगा उनके ख़ौफ़ को अम्न में बदल देगा और येह किसी त़रह़ का शिर्क नहीं करेंगे।[2]

---

[1] सूरए स़फ़, आयत ९

[2] सूरए नूर, आयत ५५

शैख़ तूसी की किताब 'ग़ैबत' में एक हदीस के मुताबिक़ येह आयत महदी मौऊद और उनके नासेरीन के बारे में नाज़िल हुई है।

४. व नुरीदो अन्नमुन्ना अलल्लज़ीनस्तुज़्एफ़ू फ़िल अर्ज़े व नज्अ-लहुम अइम्मतवँ व नज्अ-लहुमुल वारेसीन।

हम चाहते हैं जो लोग रूए ज़मीन पर कमज़ोर कर दिए गए हैं उन पर एहसान करें और उन्हें ज़मीन का वारिस और पेशवा क़रार दें।[1]

"ग़ैबते" शैख़ तूसी में इमाम अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम से हदीस नक़्ल हुई है जिसमें इमाम ने फ़रमाया: जो लोग रूए ज़मीन पर कमज़ोर कर दिए गए हैं वोह आले रसूल हैं अल्लाह उनके महदी को मुन्तख़ब करेगा ताकि उन्हें साहेबे इज़्ज़त और उनके दुश्मनों को ज़लील कर दे।

५. एअ्लमू अन्नल्लाहा योहयिल अर्ज़ा बअ्दा मौतेहा, क़द बय्यन्ना लकुमुल आयाते लअल्लकुम तअ्क़ेलून।

जान लो! अल्लाह ज़मीन को मुर्दा होने के बअ्द दोबारा ज़िन्दा करेगा। हमने अपनी आयात को तुम्हारे लिए बयान किया है ताकि तुम ग़ौर-ओ-फ़िक्र करो।[2]

"ग़ैबते" शैख़ तूसी में इब्ने अब्बास से रवायत नक़्ल हुई है जिसकी तफ़सीर करते हुए उन्होंने फ़रमाया ख़ुदा वन्द मुतआल ज़मीन में ज़ुल्म-ओ-फ़साद करने वालों की वजह से मुर्दा ज़मीन को ज़हूरे क़ाएमे आले मोहम्मद के ज़रीए ज़िन्दा करेगा।

---

[1] सूरए क़सस, आयत ५

[2] सूरए हदीद, आयत १७

अ़ल्लामा मजलिसी ने इस सिलसिले में साठ आयतें और उनसे मरबूत़ हदीसों को ज़िक्र किया है ख़ाहिशमंद ह़ज़रात किताब महदी मौऊ़द तर्जुमा अ़ली दवानी स.२४६ से २७२ पर मुलाह़ेज़ा कर सकते हैं।

सवाल ४

क्या पैग़म्बरे अकरम स़ल्ललाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम ने हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के बारे में ख़बर दी है?

जवाब:

इस सवाल का जवाब येह है कि पैग़म्बरे अकरम स़ल्ललाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम और मअ़्सूम इमामों की तरफ़ से बहुत सी हदीसें मोअ़्तबर सनद के साथ इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम और उनके ज़हूर के सिलसिले में वारिद हुई हैं जिनमें किसी शक और तरदीद की गुंज़ाइश हक़ीक़त के त़लबगारों के लिए बाक़ी नहीं है हम यहाँ पर नमूने के त़ौर पर चंद हदीसों को उन बुज़ुर्गों से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं।

रसूले अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

> **"महदी अ़लैहिस्सलाम मेरे फ़र्ज़न्दों में है उनका नाम मेरा नाम और उनकी कुनियत मेरी कुनियत होगी। ख़ुल्क़ और जिस्मानी पैकर में सबसे ज़्यादा मुझसे मुशाबेह होंगे। उनकी ग़ैबत परेशानी और बेचैनी का दौर होगा जिसमें बहुत से लोग गुमराह हो जाएँगे। उस वक़्त वोह शहाबे साक़िब की तरह आएँगे और**

ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ से भर देंगे उसी तरह जैसे वोह ज़ुल्म-ओ-जौर से भर चुकी होगी।"[1]

अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते है:

"हमारे क़ाएम को तूलानी ग़ैबत होगी। मैं शीअ़ों को देख रहा हूँ कि वोह बयाबान और स़हरा की ख़ाक छान रहे हैं लेकिन उन तक उनकी रसाई नहीं हो रही है। जान लो उनकी ग़ैबत में जो लोग अपने दीन पर साबित क़दम रहे और ग़ैबत के तूलानी होने के बावजूद उनका इंकार न करें क़यामत के दिन वोह लोग मेरे हमराह होंगे। उस वक़्त फ़रमाया: जब हमारा क़ाएम ज़हूर करेगा उसकी गर्दन पर किसी की बैअ़त न होगी इस वजह से उनकी वेलादत लोगों से पोशीदा रहेगी और वोह ख़ुद भी लोगों की आँखों से पोशीदा होंगे।"[2]

जाबिर इब्ने अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी हज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अ़लैहा की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उस वक़्त हज़रत के सामने एक लौह़ थी जिसमें औस़िया के नाम दर्ज थे। मैंने शुमार किया बारह नाम थे सबसे आख़िर में क़ाएम अ़लैहिस्सलाम का नाम था और उनमें तीन नाम मोह़म्मद और चार नाम अ़ली था।[3]

इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"क्या तुम नहीं जानते कि हम इमामों में कोई नहीं जिसकी गर्दन में ज़माने के बादशाहों में से किसी न किसी की हुकूमत

---

[1] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स़.२८७

[2] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स़.३०३

[3] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स़.३०७

हो (यअ़्नी इमामत और ख़ेलाफ़त का हक़ ज़ुल्म और ग़स्ब की बेना पर पाएमाल होगा) सिवाए उस क़ाएम के जिसके पीछे ईसा इब्ने मरियम नमाज़ पढ़ेंगे और अल्लाह उनकी वेलादत को पोशीदा और उनके वुजूद को लोगों से उनके ज़हूर तक पोशीदा रखेगा ताकि उनकी गर्दन पर किसी की हुकूमत न हो। और वोह मेरे भाई इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम **का नवाँ फ़र्ज़न्द एक आज़ाद शुदा कनीज़े ख़ुदा से होगा। अल्लाह तआ़ला उसकी उ़म्र को उसकी ग़ैबत में तूलानी करेगा फिर अपनी कुदरत से चालीस साल के जवान से कम उ़म्र की सूरत में ज़ाहिर करेगा ताकि लोग जान लें कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।"**[1]

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"मेरा नवाँ फ़र्ज़न्द हज़रत यूसुफ़ और हज़रत मूसा अ़लैहेमस्सलाम **की सुन्नत का हामिल होगा और वोह हमारे अह्लेबैत का क़ाएम है ख़ुदा वन्द मुतआ़ल उसके अम्र की इस्लाह़ एक शब में करेगा।"**[2]

इमाम सज्जाद अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते है:

"हमारे क़ाएम में अंबिया की सुन्नतों में चन्द सुन्नतें हैं जो आदम, नूह़, इब्राहीम, मूसा, ईसा, अय्यूब अ़लैहिमुस्सलाम **और मोह़म्मद** स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **से (इस तरह़ हैं) आदम-ओ-नूह़ की सुन्नत उनकी उ़म्र का तूलानी होना है और इब्राहीम** अ़लैहिस्सलाम **में वेलादत का पोशीदा होना है और मूसा में खौफ़-**

---

[1] इस्बातुल होदा, शैख़ हुर्रे आ़मेली, जि. ५, स. १५५

[2] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स़.३१७

ओ-ग़ैबत है और ईसा की उनके बअ़्द लोगों के दरमियान इख़्तेलाफ़ होना है (जैसा कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम **के ऊपर जाने के बअ़्द हुआ था बअ़्ज़ कहते थे कि वोह मर गए और बअ़्ज़ कहते थे कि सूली पर चढ़ा दिए गए .....) और अय्यूब की इम्तेहान के बअ़्द आसाइश और गुशाइश का होना है। और मोहम्मद** स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **की तलवार लेकर ज़हूर और ख़ुरूज़ करना है।"**[1]

इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते है:

"जब दुनिया के ह़ालात दिगरगूँ हो जाएँ और लोग कहने लगें कि क़ाएम अ़लैहिस्सलाम **इंतेक़ाल या हलाक हो गए हैं या कहने लगें कि किसी जंगल में चले गए हैं और उनकी बरबादी के चाहने वाले कहने लगें कि किस तरह वोह शख़्स़ ज़हूर कर सकता है जिसकी हड्डियाँ राख हो चुकी हैं? तुम उनके ज़हूर की आस लगाए रहो और जब सुनो के उन्होंने ज़हूर किया है तो उनकी तरफ़ दौड़ो चाहे तुम्हें पत्थर का सीना चाक करके जाना पड़े।"**[2]

इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

हमारे क़ाएम में गुज़श्ता अंबिया की सुन्नत मू ब मू जारी होगी..... और वोह मेरे बेटे मूसा की तरह़ है और वोह आज़ाद शुदा कनीज़ का बेटा है। ऐसी ग़ैबत में जाएगा कि अह्ले बात़िल शक में पड़ जाएँगे। फिर अल्लाह तआ़ला उसको

---

[1] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स़.३२२

[2] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स़.३२६

ज़ाहिर करेगा और मशरिक़ और मग़रिब को उसके हाथों फ़त्ह करेगा। ईसा इब्ने मरियम आसमान से ज़मीन पर आएँगे और उसके पीछे नमाज़ पढ़ेंगे और ज़मीन अपने मालिक के नूर से रोशन और मुनव्वर हो जाएगी। रूए ज़मीन पर जिस जगह भी अल्लाह के अ़लावा किसी की इबादत होती थी वहाँ पर सिर्फ़ अल्लाह की इबादत होगी। मुशरेकीन के न चाहने के बावजूद सिर्फ़ दीने ख़ुदा का बोल बाला होगा।[1]

इमाम काज़िम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"वोह क़ाएम जो ज़मीन को दुश्मनाने ख़ुदा से पाक करेगा और ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ से भर देगा जिस तरह वोह ज़ुल्म-ओ-जौर से भर चुकी थी। वोह मेरा पाँचवा फ़र्ज़न्द है। वोह अपनी जान के ख़ौफ़ से तूलानी ग़ैबत एख़्तेयार करेगा और उस ज़माने में (यअ़्नी ग़ैबत में) कुछ गरोह दीन से पलट जाएँगे और कुछ दीन पर साबित क़दम रहेंगे। मुबारक हो उन शीअ़ों को जो ग़ैबत में हमारी वेलायत से मुतमस्सिक रहें और हमारी दोस्ती और हमारे दुश्मनों से दुश्मनी पर बाक़ी रहें वोह हमसे हैं और हम भी उनसे हैं येह लोग हमारी इमामत से राज़ी हैं और हम उनके शीआ होने से राज़ी हैं ख़ुदा की क़सम हम उनकी क़िस्मत पर रश्क करते हैं कि वोह क़यामत में हमारे दर्जे में होंगे।"[2]

इमाम रज़ा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

---

[1] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स़.३४५

[2] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स़.३६१

"हमारा क़ाएम वोह है जो ज़हूर के वक़्त बूढ़ों की उ़म्र और जवानों की स़ूरत में होगा वोह इतना त़ाक़तवर है कि बड़े से बड़े दरख़्त की तरफ़ हाथ बढ़ाकर उसको जड़ से उखाड़ देगा। और अगर पहाड़ों के दरमियान आवाज़ बलन्द करे तो पत्थर टुकड़े टुकड़े हो जाएँगे। मूसा का अ़सा और सुलैमान की अंगूठी उसके साथ होगी वोह मेरा चौथा फ़र्ज़न्द है ख़ुदा जब तक चाहेगा परदए ग़ैबत और अपने ह़ेजाब में रखेगा फिर ज़ाहिर करेगा और ज़मीन को उसके हाथों अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ से भर देगा जैसे वोह ज़ुल्म-ओ-जौर से भर चुकी थी।"[1]

इमाम जवाद अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"हमारा क़ाएम वही महदी मौऊ़द है। उसकी ग़ैबत में उसका इंतेज़ार करना वाजिब है और ज़हूर के वक़्त उसकी एताअ़त वाजिब होगी। वोह मेरा तीसरा फ़र्ज़न्द है उस ख़ुदा की क़सम जिसने मोह़म्मद स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **को नबी बनाकर भेजा और हमें इमामत के लिए मुन्तख़ब किया अगर दुनिया की उ़म्र में सि़र्फ़ एक दिन बाक़ी रहे अल्लाह तआ़ला उस दिन को इतना तूलानी कर देगा ताकि हमारा क़ाएम उस दिन ज़हूर करे और वोह ज़हूर के बअ़्द ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ से भर देगा। बिल्कुल उसी तरह़ जिस तरह़ ज़मीन ज़ुल्म-ओ-जौर से भर चुकी थी"**[2]

इमाम हादी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

---

[1] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स़.३७६

[2] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स़.३७७

बेशक मेरे बअ्द इमाम मेरा बेटा ह़सन होगा और उसके बअ्द उसका बेटा क़ाएम इमाम होगा जो ज़मीन को अद्ल-ओ-इंसाफ़ से भर दे जिस तरह़ वो ज़ुल्म-ओ-जौर से भर चुकी होगी।[1]

इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"ऐ लोगो मैं तुम्हें देख रहा हूँ कि मेरे बअ्द तुम मेरे जानशीन के बारे में इख़्तेलाफ़ करोगे। जान लो जो शख़्स पैग़म्बर के बअ्द इमामों की इमामत का अ़क़ीदा रखता हो और मेरे फ़र्ज़न्द का इंकार करे वोह ऐसा है जैसे कोई तमाम अंबिया को मानता हो लेकिन पैग़म्बरे अकरम स़ल्ललाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **की नबूवत का इन्कार करता हो जबकि अगर कोई रसूलुल्लाह को न मानता हो तो हक़ीक़त में उसने तमाम अंबिया का इन्कार किया है। क्योंकि हमारे आख़री फ़र्द की इत़ाअ़त पहले फ़र्द की इत़ाअ़त की त़रह़ है। और जो शख़्स हमारे पहले मअ़्सूम का इन्कार करे गोया उसने हमारे आख़री मअ़्सूम का इन्कार किया है।"**[2]

---

[1] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स़.३८३,ह.१०

[2] महदी मौऊ़द तर्जुमा व निगारिश अ़ली दवानी, स. ३९१

सवाल ५

क्या अह्ले सुन्नत की किताबों में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के वजूद, ज़हूर और सीरत के बारे में ह़दीसें बयान हुई हैं?

जवाब:

अगरचे शीओं की किताबों में महदी मौऊ़द अ़लैहिस्सलाम के अ़क़ीदे का ज़िक्र कसरत से पाया जाता है और इस सिलसिले में ह़दीसों की तअ़्दाद हज़ारों में है लेकिन अह्ले सुन्नत की मोअ़्तबर किताबों में हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम से मुतअल्लिक़ मुतअ़द्दिद ह़दीसें मौजूद हैं।

हाँ बनी उमय्या, बनी अ़ब्बास और ज़ालिम हुक्मरानों के ज़ुल्म-ओ-इस्तेब्दाद और तशद्दुद नीज़ उस वक़्त के सियासी ह़ालात और मज़हबी तअ़स्सुब के साए में वेलायत और इमामत के सिलसिले में बह़्स और अह़ादीस की मुमानेअ़त के बावजूद भी अह्ले सुन्नत की मोअ़्तबर और अहम किताबें इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के तज़केरे से ख़ाली नहीं हैं। यहाँ चंद नमूने क़ाबिले ग़ौर हैं।

हुज़ैफ़ा कहते है रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ख़ुत़्बा दे रहे थे खुत़्बे के दौरान आइन्दा होने वाले वाक़ेआ़त के सिलसिले में गुफ़्तुगू करते हुए फ़रमाया:

> **"अगर दुनिया की उ़म्र एक रोज़ से ज़्यादा बाक़ी न रहे अल्लाह उस रोज़ को इतना तूलानी कर देगा कि मेरे फ़र्ज़न्दों में एक**

बेटा जिसका नाम मेरा नाम जिसकी कुनियत मेरी कुनियत पर होगी उठेगा।"

सलमान ने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह किस फ़र्ज़न्द से होगा? पैग़म्बर स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने जवाब दिया:

"इस फ़र्ज़न्द से और अपना हाथ इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के कांधे पर रख दिया।"[1]

और अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द कहते है: पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

"अगर दुनिया की उ़म्र में एक दिन से ज़्यादा बाक़ी न हो ख़ुदा वन्द मुतआ़ल उस दिन को इतना तूलानी करेगा ताकि मेरी उम्मत और मेरे अह्लेबैत से एक मर्द क़याम करे उसका नाम मेरे नाम पर होगा और उसकी कुनियत मेरी कुनियत पर होगी वोह ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ से भर देगा जबकि ज़ुल्म और फ़साद से भर चुकी होगी।"[2]

और पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से ही ह़दीस बयान हुई है कि हज़रत ने फ़रमाया:

"महदी मौऊ़द मेरी इतरत और हज़रत फ़ातेमा सलामुल्लाह अ़लैहा की औलाद है।"[3]

---

[1] (फ़राएदुस्सिमतैन, मोहम्मद जुवीनी ख़ुरासानी, जि.२,स़.३२५, यनाबीउ़ल मवद्दा, जि.३,स़.१६३)

[2] फ़ुसूलुल मोहिम्मा, इब्ने सब्बाग़, स.२९४

[3] फ़ुसूलुल मोहिम्मा, इब्ने सब्बाग़, स.२९४

और अबू सईद ख़ुदरी पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से रवायत नक़्ल करते हैं कि आँहज़रत (स़. अ़.) ने फ़रमाया:

"आख़री ज़माने में बादशाह की जानिब से मेरी उम्मत पर सख़्त बलाएँ नाज़िल होंगी जिन्हें कभी सुना नहीं गया है वोह ऐसी होंगी कि ज़मीन अपनी तमाम वुस्अ़तों के बावजूद ज़ुल्म-ओ-सितम से तंग हो जाएगी मोअ्मेनीन को ज़ुल्म-ओ-सितम से पनाह ह़ास़िल न होगी। पस अल्लाह मेरे घराने से एक मर्द को भेजेगा ताकि वोह ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ से भर दे जैसा कि ज़ुल्म और जौर से भर चुकी थी ज़मीन-ओ-आसमान के रहने वाले उससे राज़ी-ओ-खुश होंगे। ज़मीन अपने तमाम ख़ज़ाने को उस पर निछावर कर देगी और आसमान से मूस्लाधार बारिश होगी इस तरह़ कि मुर्दा भी दोबारा ज़िंदगी की ख़ाहिश करेंगे। वोह सात या नौ साल लोगों के दरमियान हुकूमत करेगा।"[1]

और रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से येह ह़दीस भी बयान की गई है कि पैग़म्बर ने फ़रमाया:

"मेरे महदी की पेशानी कुशादा और नाक सुतवाँ है ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ से भर देगा जैसा कि वो ज़ुल्म-ओ-जौर से भर चुकी थी। सात साल तक हुकूमत करेगा।"[2]

---

[1] अल बयान फ़ी अ़लामाते आख़ेरुज़्ज़मान, हाफ़िज़ गंजी शाफ़ई, स.४९३

[2] यनाबीउ़ल मवद्दा, जि. ३, स़. १६३, फ़ुसूलुल मोहिम्मा, इब्ने सब्बाग़ मालेकी, स.२९३

सवाल ६

तारीख़ के दामन में महदवीयत का झूठा दअ़्वा करने वाले कौन लोग थे?

जवाब:

महदवीयत और मुस़लेहे ग़ैबी का अ़क़ीदा मुसलमानों के दरमियान इतना मशहूर और मुसल्लम था कि तारीख़ में बहुत से लोग महदवीयत का झूठा दअ़्वा करते थे और कुछ तो ख़ुद दअ़्वा नहीं करते थे लेकिन अ़वाम की तरफ़ से जेहालत-ओ-नादानी या किसी ग़रज़ और हदफ़ के तहत लोग उन्हें महदी मौऊ़द तस़व्वुर करते थे और महदवीयत उनके ऊपर थोप देते थे। तारीख़ के दामन से महदवीयत का झूठा दअ़्वा करने वाले चंद लोगों के नाम आपकी ख़िदमत में पेश करते हैं।

अबू मोहम्मद अ़ब्दुल्लाह महदी

अफ़्रीक़ा में यहूदियों के साथ साज़िश करते हैं और शुरूअ़् में ज़ोह्द-ओ-पारसाई का लेबादा चढ़ा लेते हैं। येह महदी मुकतफ़ी अ़ब्बासी के हमअ़स्र थे और इसने बहुत सी जंगें लड़ीं और २८० में अपने मानने वालों को मग़रिब की त़रफ़ भेजा और जब यमन पहुँचा तो महदवीयत का दअ़्वा किया और अपना लक़ब (क़ाएम) रखा। और हुज्जतुल्लाह के नाम से सिक्का ढलवाया और २९७ जुमअ़ा के दिन अपने आप को महदी कहलवाया और अमारुल मोअ़्मेनीन का लक़ब अपने लिए मुन्तख़ब किया और ३४४ में वास़िले जहन्नम हुआ। इस महदी के अफ़्रीक़ा में बहुत से मानने वाले हैं और इस उन्वान से इसने ख़ूब शोहरत ह़ासिल की।

अबू मुस्लिम ख़ुरासानी इब्ने मुक़न्नअ़, ह़ाकिम बेअम्रिल्लाह सय्यद मोहम्मद मशहदी मूसा कुर्दी, अबुल केराम दारानी, शेख़ उलूई अ़ब्दुल्लाह अ़हफ़ी और बहुत से लोगों ने महदवीयत का दअ़्वा किया है तफ़सील के लिए तारीख़ की किताबों का मुतालेआ़ करें।

सवाल ७

क्यों इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम जब क़ाएम लिया जाता है तो तमाम शीअ़याने अह्लेबैत खड़े हो जाते हैं?

जवाब:

शअ़्बानुल मोअ़ज़्ज़म में शीओं के दरमियान जो अअ़्माल राएज-ओ-मुतदावेल हैं उनमें से एक येह है कि जब किसी जगह इमाम अ़ज्जलल्लाहो तआ़ला फ़रजहुश्शरीफ़ का क़ाएम नाम लिया जाता है तो मज्मेअ़् में बैठे तमाम लोग खड़े हो जाते हैं। इस लफ़्ज़ के इस्तेअ़्माल के वक़्त खड़े होने के वुजूब पर कतई दलील हमारे पास न होने के बावजूद इस ह़द तक कहा जा सकता है कि लोगों के दरमियान इस अ़मल का मुस्तह़ब के उ़न्वान से मशहूर होने की कहीं न कहीं इसका तअ़ल्लुक़ दीन से है और हक़ीक़त में येह इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के लिए अदब-ओ-एह़तेराम का इज़्हार है।

जैसा कि नक़्ल हुआ है: ख़ुरासान में इमाम रज़ा अ़लैहिस्सलाम के सामने लफ़्ज़ 'क़ाएम' ज़िक्र हुआ। ह़ज़रत रज़ा अ़लैहिस्सलाम खड़े हुए और अपने हाथों को अपने सर पर रखा और फ़रमाया:

अल्लाहुम्मा अ़ज्जिल फ़रजहू व सह्हिल मख़रजहू

ऐ अल्लाह! उनके ज़हूर में तअ्जील फ़रमा और उनके ज़हूर और क़याम के लिए ज़मीन को हमवार फ़रमा।[1]

और एक हदीस से पता चलता है कि येह रविश इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में भी मुतदावेल थी। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से सवाल किया गया: क्यों लोग (क़ाएम) कहते हुए खड़े हो जाते हैं? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

साहेबुल अम्र को तूलानी ग़ैबत होगी, चूँकि अपने दोस्तों से बेइंतेहा मोहब्बत और लुत्फ़ से पेश आते हैं। जो शख़्स उन्हें इस लक़ब से जो उनकी तूलानी हुकूमत की तरफ़ इशारा और ग़ैबत की तन्हाई में इज़्हारे मोहब्बत है याद करता है, इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम भी उससे मोहब्बत-ओ-उतूफ़त का इज़्हार करते हैं और चूँकि इस हाल में इमाम अ़लैहिस्सलाम उसकी तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं इसलिए मुनासिब है कि खड़े होकर एहतेराम का इज़्हार और उनके ज़हूर की तअ्जील के लिए दुआ करे।[2]

बअ्ज़ सूरत-ओ-शराएत में हम कह सकते है कि खड़ा होना वाजिब है: मसलन इमाम का लक़ब या दूसरे अल्क़ाब किसी मजलिस में लिया गया उस वक़्त तमाम हाज़ेरीने मजलिस उसके एहतेराम में खड़े हो गए उस सूरत में अगर कोई शख़्स बग़ैर किसी उज़्र के अपनी जगह से खड़ा न हो तो येह अ़मल इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से उसकी बेतवज्जोही और आप (अ़.स.) से अ़लाक़ामंदी और आप (अ़.स.) की ज़ात की तअ्लीम-ओ-तकरीम के मनाफ़ी होगी इस वजह से येह काम हराम होगा।

---

[1] बेहारुल अनवार, जि. ५१, स. ३०

[2] अलज़ामुन्नासिब, शैख़ हाएरी यज़दी, जि. १, स. २७१

आयतुल्लाह सय्यद महमूद तालेक़ानी रह्मतुल्लाह अलैहे फ़रमाते है:"खड़े होने का हुक्म शायद सिर्फ़ एहतेराम के लिए हो। वरना अल्लाह और रसूल और दूसरे अइम्मा का भी खड़े होकर एहतेराम करना ज़रूरी होता। बल्कि तैयार रहने का हुक्म, आलमी इन्क़ेलाब के लिए मुक़द्देमात की फ़राहमी, इमाम की मदद के लिए उनकी सफ़ों में खड़े रहना ही इसकी हक़ीक़त है।..... और येह मुसीबतें, उमवी हुकूमतों की ज़िल्लत-ओ-पस्ती के आग़ाज़ से, सलीबी जंगों और मुग़लों के बेरहमाना हमलों से, इस्तेअ्मारी हुकूमतें एक के बअ्द एक लोगों पर थोपी जाती रहीं। मगर आज उनके निशाने क़दम भी बाक़ी नहीं हैं। लेकिन वोह दीन जिसका हुक्म हादियाने बरहक़ देते हैं जब हुकूमते इलाही के मुअस्सिस का सरीह नाम "क़ाएम" लिया जाए तो खड़े होकर उनके एहकाम पर अपनी आमादगी का इज़्हार करो और हमेशा ख़ुद को ताक़तवर दिखाओ और बताओ कि ऐसे शख़्स को कभी मौत नहीं आ सकती है।"[1]

[1] ख़ुरशीदे मग़रिब, स.२६४

सवाल ८

अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम और इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के दरमियान क्या शबाहत पाई जाती है?

जवाब:

इस सवाल के जवाब के लिए अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की चंद हदीसों की तरफ़ क़ारेईन की तवज्जोह मब्ज़ूल करते हैं।

इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

> **"हमारे क़ाएम में अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम की सुन्नतों में चंद सुन्नत पाई जाती है एक सुन्नत आदम अ़लैहिस्सलाम और एक नूह अ़लैहिस्सलाम और एक इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की और एक मूसा अ़लैहिस्सलाम और एक ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और एक अय्यूब अ़लैहिस्सलाम और एक सुन्नत हमारे पैग़म्बर** सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **की पाई जाती है। आदम अ़लैहिस्सलाम की सुन्नत तूले उम्र और इब्राहीम की वेलादत को पोशीदा होना और लोगों से किनारा कशी एख़्तेयार करना है मूसा अ़लैहिस्सलाम की ख़ौफ़ और लोगों से ग़ैबत और ईसा अ़लैहिस्सलाम की उनके बारे में लोगों के दरमियान इख़्तेलाफ़ का होना अय्यूब की परेशानी के**

बअ्द आसानी का होना और पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **की तलवार के साथ क़याम करना है।**[1]

मोह़म्मद इब्ने मुस्लिम कहता है इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में शरफ़याब हुआ ताकि ह़ज़रत से क़ाएमे आले मोह़म्मद के बारे में सवाल करूँ इससे पहले कि मैं सवाल करता इमाम ने फ़रमाया:

"ऐ मोह़म्मद इब्ने मुस्लिम क़ाएमे आले मोह़म्मद में पाँच शबाहत अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम **की है यूनुस इब्ने मता, यूसुफ़ इब्ने यअ़्क़ूब, मूसा और ईसा और मोह़म्मद** सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **की शबाहत है। ह़ज़रत यूनुस से उनकी ग़ैबत में जब ह़ज़रत यूनुस बूढ़े हो गए थे और जवान की सूरत में पलट कर आए थे। और यूसुफ़ से शबाहत अपने ख़ास-ओ-आ़म और भाईयों से छिपकर रहना और उस काम पर एअ़्तेराज़ था जो यअ़्क़ूब को पेश आया था इसके बावजूद कि उनके और बाप और उनके चाहने वालों के दरमियान फ़ासला बहुत कम था। मूसा से जो शबाहत है लोगों से हमेशा ख़ौफ़ और ग़ैबत का तूलानी होना और वेलादत की ख़बर का आ़म न होना और उनके चाहने वालों का पोशीदा रहना इस ज़िल्लत और रुस्वाई की वजह से जो उन लोगों को ह़ासिल हुई यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया और दुश्मनों पर कामियाबी अ़ता की। ईसा** अ़लैहिस्सलाम **से शबाहत की वजह वोह इख़्तेलाफ़ है जो लोगों के दरमियान उनके तअ़ल्लुक़ से हुआ क्योंकि एक गरोह कहता था कि वोह पैदा नहीं हुए हैं और कुछ लोग कहते थे कि वोह इन्तेक़ाल कर गए है और कुछ लोग कहते थे कि**

---

[1] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, स. ३२२

उन्हें क़त्ल कर दिया गया और उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया। और अपने जद्दे अमजद से शबाहत तलवार के साथ क़याम करना और दुश्मनाने ख़ुदा और रसूल और ज़ालिमों और जाबिरों को क़त्ल करना और तलवार के ज़रीए क़ामियाबी और लोगों के दिलों में रोअ्ब बैठाना है और उनके ज़हूर की अ़लामतों में से एक शाम की जानिब से सुफ़ियानी लश्कर का ख़ुरूज और यमन से एक आदमी का निकलना और माहे मुबारके रमज़ान में आसमानी आवाज़। और पुकारने वाला है जो उसका और उसके वालिदे बुज़ुर्गवार का नाम लेकर आवाज़ देगा।"[1]

[1] महदी मौऊ़द तरजुमा व निगारिश अ़ली दवानी, स. ४८१

सवाल ९

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दगी की मुख़्तसर तारीख़ क्या है?

जवाब:

इस्म: म ह़ म द अ़लैहिस्सलाम

कुनियत: महदी मौऊ़द, वलीये अ़स्र, साहेबुज़्ज़मान, क़ाएम, मुन्तज़र, हुज्जतुल्लाह, मुन्तक़िम, व ..... अ़ज्जलल्लाहो तआ़ला फ़रजहुश्शरीफ़।

वालिदे गेरामी और वालेदाए गेरामी का नाम: इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम जनाब नरजिस ख़ातून सलामुल्लाह अ़लैहा

मकान और ज़माने वेलादत: १५ शअ़्बान २५५ हिजरी क़मरी सामर्रा में पैदा हुए। और तक़रीबन पाँच साल पेदरे बुज़ुर्गवार के सायए उ़तूफ़त में मख़्फ़ी तौर से परवरिश पाते रहे।

ग़ैबते सुग़रा का ज़माना: इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की शहादत के बअ़्द मन्सबे इमामत पर फ़ाएज़ हुए और उसी तारीख़ से (२६० हि.) अल्लाह के इज़्न से ग़ैबते सुग़रा में ६९ साल तक यअ़्नी ३२९ हिजरी क़मरी तक रहे और उस दौरान चार ख़ास नाएब उनके और लोगों के दरमियान राबेत़ा का ज़रीआ़ थे।

ग़ैबते कुबरा: ३२९ हिजरी क़मरी से ग़ैबते कुबरा का दौर शुरूअ़् हुआ नेयाबते ख़ास्सा का दरवाज़ा बंद हुआ और नेयाबते आ़म्मा के ज़माने का आगाज़ हुआ। और येह ग़ैबत का दौर मशीयते इलाही से जारी है और जब अल्लाह चाहेगा इमाम अ़लैहिस्सलाम ज़हूर करेंगे। और दुनिया को अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से भर देंगे।

सवाल १०

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की वेलादत पर क्या दलील है? क्या वेलादत के बअ़्द किसी ने आँह़ज़रत को देखा है?

जवाब:

शीआ़ और सुन्नी मुवर्रेख़ीन ने ख़ास त़ौर से इमाम की वेलादत के सिलसिले में लिखा है इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की वेलादत पर बरकत और दुनिया में क़दम रंजा फ़रमाना तारीख़ के क़तई और मुसल्लम अम्न में है।

मिसाल के त़ौर पर अह्ले सुन्नत के मशहूर मुवर्रिख़ अ़ली इब्ने हुसैन मसऊ़दी कहते हैं २६० हिजरी में अबू मोह़म्मद ह़सन इब्ने अ़ली इब्ने मोह़म्मद इब्ने अ़ली इब्ने मूसा इब्ने जअ़्फ़र इब्ने मोह़म्मद इब्ने अ़ली इब्निल हुसैन इब्ने अ़ली अ़लैहिमुस्सलाम मोअ़्तमिद अ़ब्बासी के ज़मानए ख़ेलाफ़त में इंतेक़ाल कर गए और इंतेक़ाल के वक़्त उनकी उ़म्र २९ साल थी और वोह महदी मुन्तज़र के पेदरे बुज़ुर्गवार थे।[1]

और शैख़ सुलैमान क़ुन्दूज़ी कहते हैं मोअ़्तमद और भरोसेमंद लोगों की क़तई-ओ-यक़ीनी ख़बर येह है कि क़ाएम अ़लैहिस्सलाम की वेलादत १५ शअ़्बान की शब २५५ हिजरी सामर्रा में हुई है।[2]

---

[1] मरूजुज़्ज़हब, जि. ४, स. १९९

[2] यनाबीउ़ल मवद्दा, जि. ३, स. ११४

चूँकि बनी अ़ब्बास के ख़लीफ़ा को मअ़्लूम था कि शीओं के बारहवें इमाम महदी मौऊ़द हैं जो ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ से भर देंगे और ज़ुल्म-ओ-फ़साद का क़लअ़् क़मअ़् कर देंगे। और येह भी जानते थे कि वोह इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के फ़र्ज़न्द हैं इसलिए इस नूर को ख़ामोश करने की तग-ओ-दौ में लग गए इसी लिए इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम वेलादत के पहले दिन से मख़्फ़ीयाना त़ौर से ज़िंदगी बसर कर रहे थे और लोग आम त़ौर से उन्हें नहीं देखते थे लेकिन इसके बावजूद इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के अस्ह़ाब में बहुत से ऐसे ख़ुशनसीब थे जिन्होंने इमाम को देखा और उनकी बारगाह में शरफ़याब हुए। उनमें से कुछ इस तरह हैं।

१. ह़कीमा ख़ातून इमाम जवाद अ़लैहिस्सलाम की बेटी और दसवें इमाम की बहन और इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की फुफी हैं जो इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की वेलादत की रात इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ज़ेयारत करती हैं और नसीम और मारीया आँह़ज़रत की कनीज़े कहती हैं कि वोह बच्चा पैदा हुआ और मिट्टी पर सज्दा किया और अंगुश्ते शहादत को आसमान की त़रफ़ बलंद किया छींक आई और फ़रमाया:

   अल-ह़म्दो लिल्लाहे रब्बिल अ़ालमीन व सल्लल्लाहो अ़ला मोह़म्मदिँव व आलेही।[1]

२. अबू बसीर इमाम का ग़ुलाम कहता है: इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के पास गया जब कि वोह झूले में थे क़रीब गया और सलाम किया ह़ज़रत ने फ़रमाया मुझे पहचानते हो? मैंने अर्ज़ किया हाँ आप मेरे

---

[1] अलज़ामुन्नासिब, शैख़ ह़ाएरी, जि. १, स. ३४०

सय्यद-ओ-सरदार और मेरे इमाम के फ़र्ज़न्दे अर्जुमन्द हैं.....हज़रत (अ.स.) ने फ़रमाया:

अना ख़ातमुल औसियाए व बी यरफ़उल बला-अ मिन अह्ली व शीअ़ती।

"मैं आख़री वसी हूँ मेरे ज़रीए मेरे ख़ानदान और मेरे शीओं से बलाएँ दूर होती हैं।"[1]

३. सईद इब्ने अ़ब्दिल्लाह कुम्मी बहुत से ख़ुतूत लेकर लोगों के हमराह आँहज़रत की ज़ेयारत के लिए सामर्रा गए और इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की दाहिनी त़रफ़ एक बच्चे को देखा जो चाँद की तरह चमक रहा था। उन लोगों ने पूछा येह कौन है? कहा येह महदी क़ाएमे आले मोहम्मद है।[2]

४. एक दिन चालीस शीआ इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के पास आए और हज़रत से दरख़ास्त की कि अपने बअ़्द हुज्जते ख़ुदा को दिखला दें और इमाम ने वैसा ही किया। और उन्होंने एक फ़र्ज़न्द को चौधवीं के चाँद की तरह अपने बाप की शबीह हुजरे से बाहर आते देखा। इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: मेरे बअ़्द येह फ़र्ज़न्द तुम्हारा इमाम है और तुम्हारे दरमियान मेरा जानशीन और ख़लीफ़ा है इसके हुक्म को बजा लाओ और इसकी इमामत से जुदा न होना वरना हलाक हो जाओगे और तुम्हारा दीन बरबाद हो जाएगा और येह भी जान लो कि आज के बअ़्द तुम इसको देख नहीं सकोगे

---

[1] कशफुल ग़ुम्मा, अ़ल्लामा अर्बली, जि. २, स. ४९९

[2] अलज़ामुन्नासिब, जि. १, स. ३४२

यहाँ तक कि एक तूलानी मुद्दत गुज़र जाए इस बेना पर इसके नाएब उस्मान बिन सईद की इताअ़त करो।[1]

५. अबू सह्ल नोबख़्ती कहते है: इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने बीमारी की ह़ालत में इस बच्चे को अपने पास त़लब किया महदी अ़लैहिस्सलाम उस वक़्त बच्चे थे बाप के पास लाए गए और उन्होंने बाप को सलाम किया मैंने उन्हें देखा गंदुमी रंग घुँघराले बाल और मत्था चौड़ा था इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने "या सय्यदो अह्लेबैतेही" कहकर बुलाया यअ़्नी 'ऐ अपने घर के सय्यद-ओ-सरदार।' फिर इमाम (अ.स.) ने कहा 'उबली हुई दवा पीने में मेरी मदद करो और उन्होंने वैसा ही किया फिर उन्होंने बाप को वुज़ू कराया उस वक़्त इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने उनसे फ़रमाया:

ऐ बेटा तुम मेरे महदी हो और तुम रूए ज़मीन पर हुज़्ज़ते खुदा हो....[2]

---

[1] अलज़ामुन्नासिब, जि. १, स. ३४१

[2] अलज़ामुन्नासिब, जि. १, स. ३१५

सवाल ११

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने अपने बाबा की शहादत के बअ़्द दुश्मनों की कसरत के बावजूद अपने आप को क्यों ज़ाहिर किया?

जवाब:

येह बात गुज़र चुकी है कि इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दगी ख़ास शराएत की वजह से चंद मुख़्लेसीन के अ़लावा किसी ने इमाम को नहीं देखा था ज़माना गुज़रता रहा यहाँ तक कि इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की शहादत का दिन ८ रबीउ़ल अव्वल २६० हिजरी आता है उस दिन कुछ मौक़े ऐसे आते हैं जिनकी वजह से इमाम अ़लैहिस्सलाम अपने आप को कुछ लोगों को दिखाते हैं और इसी ज़िम्न में उन लोगों को भी ज़ेयारत कराई जो तशीए़ जनाज़ा में शिरकत के लिए आए थे।

१. इमाम की नमाज़े जनाज़ा इमाम के अ़लावा कोई और नहीं पढ़ा सकता। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के लिए इस सुन्नते इलाही और राज़े इलाही को बाक़ी रख़ने लिए ज़रूरी था कि इमाम ज़ाहिर होकर अपने वालिदे बुज़ुर्गवार की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएँ।

२. इस बात को रोकने के लिए कि ख़लीफा की तरफ़ से कोई आए और ग्यारहवें इमाम की नमाज़े जनाज़ा पढ़े और फिर इमामत के ख़ातमे का ए़लान कर दिया जाए और ज़ालिम और जाबिर अ़ब्बासी ख़लीफ़ा शीअ़ों में इमामत का ज़िम्मेदार बन बैठे इसी लिए इमाम ने अपने आप को ज़ाहिर किया।

३. इमामत के सिलसिले में दाख़िली इन्तेशार को रोकने के लिए क्योंकि जअ्फ़र इब्ने अ़ली अल-हादी अ़लैहिस्सलाम जो जअ्फ़रे कज़्ज़ाब और जअ्फ़रे त़व्वाब के नाम से मशहूर हैं और जो इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के भाई थे वोह इमामत के दावेअ्दार होना चाहते थे इमामे ज़माना ने ज़ाहिर होकर सारे मन्सूबों पर पानी फेर दिया। और अपने वालिद बुर्ज़ुगवार की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

४. इमामत और हक़ीक़ी वेलायत के जारी रहने पर मोह्र लगाने के लिए ज़ाहिर हुए ताकि इमामत पर अ़क़ीदा रखने वालों के लिए साबित हो जाए कि इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की शहादत के बाद दूसरे यअ्नी बारहवें इमाम इस रूह़ानी वेरासत के अ़लम बरदार और रेसालते इस्लामी और दीनी और दुनियावी वेलायत के वारिस हैं और इस दुनिया में आ चुके हैं।[1]

हाँ उस वक़्त अ़ब्बासियों को पता चला कि जाबिरों की गर्दन तोड़ने वाला ज़ालिमों को रेशाकन करने वाला और मज़्लूमों के ख़ून का बदला लेने वाला पैदा हो चुका है।

---

[1] ख़ुरशीदे मग़रिब, स. २४

सवाल १२

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की वेलादत के ह़ालात और शराएत क्या थे?

जवाब:

ह़कीमा ख़ातून इमाम जवाद अ़लैहिस्सलाम की दुख़्तरे नेक अख़्तर और इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की फुफी इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के वेलादत के ह़ालात और शराएत इस तरह़ बयान करती हैं।

अबू मोह़म्मद इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम ने १५ शअ़्बान की शब में किसी से पैग़ाम कहलाया "ऐ फुफी, आज की शब इफ़्तार के लिए हमारे पास आ जाइऐ। क्योंकि आज की शब अल्लाह अपनी हुज्जत को ज़ाहिर करेगा" ह़कीमा ख़ातून कहती हैं मैंने पूछा येह बच्चा किससे होगा? इमाम ने जवाब दिया: नरजिस ख़ातून से। मैंने अर्ज़ किया मैं नरजिस में ह़म्ल के आसार नहीं पाती हूँ ह़ज़रत ने फ़रमाया: जो मैंने कहा वोह होगा। मैं बैठी थी नरजिस ने आकर मेरे पैर से नालैन अलग किया और फ़रमाया: ऐ मेरी शहज़ादी आप कैसी हैं मैंने कहा आप मेरी शहज़ादी और हम अह्लेबैत से हैं वोह मेरी बात सुनकर मुतअ़ज्जिब हुईं और नाराज़ होकर कहने लगीं येह कैसी बात है? मैंने कहा आज की शब अल्लाह तुम्हें एक ऐसा बेटा अ़ता करेगा जो दुनिया और आख़ेरत का सरदार होगा नरजिस ख़ातून मेरी बात सुनकर शर्मा गईं।

फिर इफ़्तार के बअ़्द मैंने नमाज़े एशा पढ़ी और बिस्तर पर चली गई। जब आधी रात का कुछ ह़िस्सा गुज़र गया मैं बिस्तर से उठी और नमाज़े शब में मशग़ूल हो गई तअ़्क़ीबाते नमाज़ के बअ़्द दोबारा सो गई और दोबारा

जब उठी तो नरजिस भी उठ गई और नमाज़े शब बजा लाई मैं तुलूए सुब्ह जानने के लिए कमरे से बाहर चली गई मैंने देखा कि तुलूए फ़ज्र हो गया है और नरजिस सो रही है उस वक़्त मेरे ज़ेह्न में ख़याल आया कि क्यों हुज्जते ख़ुदा ज़ाहिर नहीं हुआ। क़रीब था कि मेरे दिल में शक पड़ जाता कि अचानक बग़ल के कमरे से ह़ज़रत इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की आवाज़ सुनी: ऐ फ़ुफी जल्दी न करें वअ़्दा पूरा होने का वक़्त क़रीब है। मैं भी बैठ गई और सूरए सज्दा और सूरए यासीन पढ़ने लगी। जब मैं क़ुरआन पढ़ रही थी उस वक़्त अचानक नरजिस ख़ातून इज़्तेराब की ह़ालत में बेदार हुईं।

बअ़्ज़ रवायत की बेना पर जो मुन्तहल आमाल में भी ज़िक्र हुई है ह़कीमा ख़ातून कहती हैं नरजिस ख़ातून जब ख़ाब से बेदार हुई। मैंने उन्हें सीने से लगा लिया और अल्लाह का नाम विर्द करने लगी। इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: ऐ फ़ुफी अम्माँ उनके लिए सूरए क़द्र की तेलावत कीजिए मैंने उस सूरए की तेलावत की और नरजिस से पूछा तुम्हारी ह़ालत कैसी है? उन्होंने जवाब दिया आपके मौला ने जो फ़रमाया था वोह ज़ाहिर हो गया। मैंने दोबारा सूरए क़द्र की तेलावत की बच्चे ने भी माँ के शिकम में मेरे साथ सूरए क़द्र को पढ़ा मैं डर गई।

मैं जल्दी से उनके क़रीब गई और पूछा क्या तुम कुछ एह़सास कर रही हो? नरजिस ने जवाब दिया: हाँ मैंने कहा अल्लाह का नाम लो येह वही वक़्त है जिसका ज़िक्र अव्वले शब किया था परेशान न हो अपने दिल को संभालो। इसी दौरान मेरे और उनके दरमियान नूर का पर्दा ह़ाएल हो गया। अचानक मुझे पता चल गया कि बच्चा दुनिया में ज़ाहिर हो चुका है मैंने नरजिस से कपड़ा हटाया मैंने देखा एक बच्चा ज़मीन पर सर रखे हुए ज़िक्रे ख़ुदा में मशग़ूल है जब मैंने गोद में लिया तो इस बच्चे को पाक-ओ-पाकीज़ा पाया। उस वक़्त इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की आवाज़

आई ऐ फ़ुफी मेरे बच्चे को मेरे पास लाइए जब नौमौलूद को ह़ज़रत की ख़िदमत में ले गई इमाम ने अपनी आग़ोश में लिया बच्चे के हाथ और आँख पर हाथ फेरा और दाहिने कान में अज़ान और बाएँ कान में अक़ामत पढ़ी और फ़रमाया:

ऐ बेटा बातें करो पस

उस बच्चे ने कहा

अश्हदो अन ला इलाहा इल्लल्लाहो व अश्हदो अन्न मोह़म्मदन रसूलुल्लाह

इसके बअ़्द अमीरुल मोअ्मेनीन और दूसरे इमामों की इमामत की गवाही दी और जब अपने नाम पर पहुँचे तो फ़रमाया:

अल्लाहुम्मा अन्जिज़ ली वअ़्दी व अतमिम ली अम्री व सब्बित व ताती व अम-लउल अर्ज़ा बी अ़द्लन व क़िस्तन

> **परवरदिगार मेरे वअ़्दे को यक़ीनी और मेरे अम्र को कामिल फ़रमा दे और मुझे साबित क़दम फ़रमा और ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ से मेरे ज़रीए पुर कर दे।**

साँतवें रोज़ जब मैं इमाम की ख़िदमत में गई तो आपने मुझसे बच्चा लाने को कहा मैं एक कपड़े में लपेट कर इमाम के पास ले गई। इमाम ने उस वक़्त फ़रमाया ऐ बेटा मुझसे बात करो उस वक़्त उसने इस आयत की मुकम्मल तेलावत फ़रमाई।

सनुरीदो अन्न मुन्न अ़लल्लज़ीनस्तुज़्एफ़ू फ़िल अर्ज़े.....

दूसरी रवायतों में इस तरह है कि जब इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए एक नूर सातेअ़् हुआ जिसने पूरे आसमान को घेर लिया और सफ़ेद मुर्ग़ाबी को देखा कि आसमान से ज़मीन पर आ रही है और अपने सर और परों को ह़ज़रत के बदन से मस करती और उड़ जाती हैं। पस इमाम ह़सन

अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने मुझे आवाज़ दी ऐ फुफी उसे मेरे पास लाइए जब मैंने गोद में लिया तो मैंने मख़्तून और पाक-ओ-पाकीज़ा पाया। और दाहिने बाज़ू पर लिखा था:

जाअलहक़्क़ो व ज़हक़लबात़ेलो इन्नल बात़िला काना ज़हूक़ा[1]

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम जब दुनिया में तशरीफ़ लाए तो इमाम से बेशुमार मोअ्जेज़ात ज़ाहिर हुए और इस तरह इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का वजूदे मुक़द्दस जुमआ के दिन १५ शअ़्बान को २५५ हिजरी में दुनिया में ज़ाहिर हुआ। और दूसरे सवाल के जवाब का जहाँ तक तअ़ल्लुक़ है इस सिलसिले में हम कह सकते हैं कि रवायतों से पता चलता है कि इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम इस बच्चे के महदी मौऊ़द होने की बेना पर बहुत ज़्यादा एह़्तेयात करते थे यहाँ तक कि क़रीबी लोगों से भी इशारों में बातें करते थे ताकि कोई इमाम की बात सुनकर ह़ाक़िमे वक़्त को आपके पैदा होने की ख़बर देकर ख़तरा न पैदा कर दे।

जैसा कि किताब 'ग़ैबत' में शैख़ तूसी ने रवायत नक़्ल की है अह़मद इब्ने इस्ह़ाक़ कुम्मी ने इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम से इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया। इमाम ने अपने हाथों से इशारा किया कि वोह ज़िन्दा और सह़ीह़-ओ-सालिम हैं।[2]

---

[1] मुन्तहल आमाल, मोहद्दिसे कुम्मी, स. २८५

[2] महदी मौऊ़द, तर्जुमा व निगारिश अ़ली दवानी, स. ३९३

सवाल १३

जनाब नरजिस ख़ातून और इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम में क्या रिश्ता है?

जवाब:

नरजिस ख़ातून इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की मादरे गेरामी और नस्ले ईसा इब्ने मरियम के ह़वारियों की ख़ूबसूरती और वजाहत की मलिका हैं। अल्लाह की क़ुदरत ने इस अ़ज़ीम मलिका को इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की ज़ौजा बनाकर रूम से सामर्रा भेजा ताकि गौहरे ताबनाक का वजूद इस पाक-ओ-पाकीज़ा रह़्म में परवान चढ़े वोह रूम के बादशाह की बड़ी बेटी और शमऊ़न वसी बिला फ़स्ल जनाब ईसा की नस्ल से हैं और उनकी दास्तान इस त़रह़ है कि "बुश्र इब्ने सुलैमान अय्यूब अन्सारी के फ़र्ज़न्दों में और इमाम हादी और इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहेमस्सलाम के मुख़्लिस शीओं में थे और सामर्रा में इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के हमसाए का शरफ़ ह़ासिल था वोह कहते है एक दिन इमाम हादी अ़लैहिस्सलाम का ख़ादिम मेरे घर आया और उसने कहा इमाम को तुमसे काम है। जब मैं इमाम (अ.स.) की ख़िदमत में पहुँचा तो इमाम (अ.स.) ने फ़रमाया:

> **"ऐ बुश्र तुम अन्सार की औलाद से हो जो पैग़म्बर के मदीने में वारिद होने के बअ़्द उनकी मदद के लिए उठ खड़े हुए। और तुम्हारी दोस्ती हम अह्लेबैत के बारे में यक़ीनी है इस बेना पर मैं तुम पर बहुत भरोसा करता हूँ और तुम्हें एक मन्ज़ेलत अ़त़ा करना चाहता हूँ। मैं तुम्हें राज़दार बना रहा हूँ येह राज़ तुम तक मह़दूद रहे।"**

फिर एक पाकीज़ा ख़त रूमी ज़बान में तह्रीर किया और उस पर अपनी मोह्र लगा कर बंद किया और एक ज़र्द रंग की थैली जिसमें दो सौ पच्चीस अशर्फ़ी थी बाहर निकाला और फ़रमाया:

येह थैली लेकर बग़दाद जाओ फ़ुलाँ दिन सुब्ह फ़ुरात के पुल के किनारे एक कश्ती आएगी उसमें तुम बहुत से असीरों को देखोगे जिसमें अकसर ख़रीदने वाले बनी अ़ब्बास के अशराफ़ से तअ़ल्लुक़ रखते होंगे और अ़रब, जो उन में बहुत कम होंगे उस वक़्त तुम उ़मर इब्ने ज़ैद नाम के गुलाम बेचने वाले की ताक में रहना तुम्हें इस सिफ़त की कनीज़ उनके दरमियान नज़र आएगी.....

ऐ बुश्र उस वक़्त तुम उस बेचने वाले के पास जाना और कहना कि मैं एक बुज़ुर्ग का ख़त रूमी ज़बान में लाया हूँ जिसमें ज़रूरत की चीज़ें लिखी हुई हैं ख़त कनीज़ को दे दो ताकि ख़त लिखने वाले के बारे में सोच ले। अगर उसने ख़त लिखने वाले से रग़बत का इज़्हार किया और तुम भी राज़ी हो गए तो मैं उसकी वकालत में उस कनीज़ को खरीद लूँगा।

बुश्र इब्ने सुलैमान कहते है मैंने इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम के हुक्म पर अ़मल किया और उसी जगह गया और इमाम (अ़.स.) ने जो फ़रमाया था उसे मुलाहेज़ा किया और ख़त उस कनीज़ के ह़वाले किया। जैसे ही उस कनीज़ की निगाह उस ख़त पर पड़ी ज़ार ज़ार गिरिया करने लगी और उ़मर इब्ने ज़ैद की तरफ़ देखकर कहा: मुझे इस ख़त लिखने वाले के हाथ बेच दो और क़सम खाकर कहा कि दूसरी सूरत में अपने आप को हलाक कर लूँगी।

मैंने बेचने वाले से क़ीमत के सिलसिले में बहुत बह़स की यहाँ तक कि वोह उस मबलग़ पर राज़ी हो गया जो इमाम अ़लैहिस्सलाम ने मेरे हवाले

किया था मैंने पैसा उसके ह़वाले किया और उस कनीज़ के साथ जो बहुत ख़ुश थी उस जगह आ गया जो पहले से मैंने बग़दाद में ले रखी थी। आने के बअ़्द मैंने देखा कि उस ख़त को बेसब्री से अपनी जेब से निकालकर बोसा लिया और अपनी आँखों और पलकों पर रखा और अपने बदन-ओ-सूरत से मस किया।

मैंने कहा: बहुत तअ़ज्जुब की बात है कि तुम इस ख़त का बोसा ले रही हो जिसके लिखने वाले को नहीं पहचानती हो। उसने कहा: मैं जो कह रही हूँ उसे ग़ौर से सुनो ताकि तुम्हें इसकी वजह मअ़्लूम हो जाए। मैं क़ैसरे रूम के बेटे यशूआ़ की बेटी हूँ। मेरी माँ हवारीयों की औलाद से हैं और हमारा नसब ह़ज़रत ईसा (अ.स.) से मिलता है। सुनो मैं तुम्हें अपनी अ़जीब दास्तान सुनाती हूँ।

मेरे दादा क़ैसरे रूम तेरह साल की उम्र में मेरी शादी अपने भाई के बेटे से कराना चाहते थे। तीन सौ रोहोब और क़िस्सीसीने ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और सात सौ मर्दों में अशराफ़ और चार हज़ार ओमरा और लश्कर के सिपाही और सरदारे मम्लेकत को जमअ़् किया। और उस वक़्त चालीस सुतून का जवाहेरात से आरास्ता तख़्त सजाया गया और जब अपने भाई के बेटे को उस पर बिठलाया और सलीबों को बाहर निकाला और उस्क़ुफ़ उसके ऊपर बैठे और इंजील को खोला अचानक सलीबें ऊपर से ज़मीन पर गिर पड़ी और तख़्त के पाए टूट गए।

मेरा चचा ज़ाद भाई बेहोशी के आ़लम में ज़मीन पर गिर पड़ा उस्क़ुफ़ों के चेहरे और सूरत के रंग बदल गए और थर थर काँपने लगे। उस्क़ुफ़ के बुज़ुर्ग ने जब येह देखा तो मेरे जद से कहने लगा: ऐ बादशाह हमें इस मन्हूस हालत देखने से मआ़फ़ फ़रमा जो दीने ईसा और बादशाह के ज़वाल की बड़ी अ़लामत है।

मेरे दादा ने हालात का अंदाज़ा फ़ाले बद से किया उस्कुफ़ों को हुक्म दिया कि तख़्त के पाए दोबारा लगाएँ जाएँ और दोबारा सलीबों को सजाया जाए और फ़रमाया: मेरे बदबख़्त भाई के बेटे को लाओ ताकि किसी भी सूरत इस लड़की की शादी उस से कर दूँ ताकि शायद इस मुबारक रिश्ते से उसकी नहूसत चली जाए।

जब दोबारा उसके हुक्म पर अ़मल किया गया तो पहली जैसी सूरते हाल फिर रूनुमा हुई तो लोग भाग गए और मेरा दादा ग़मगीन ह़ालत में ह़रम सरा में चला गया और परदे गिर पड़े। उस शब मैंने ख़ाब में देखा जैसे ह़ज़रत ईसा और शमऊ़न उनके वसी और उनके फ़र्ज़न्दों में कुछ ह़वारीन मेरे दादा क़ैसर के मह़ल में जमअ् हुए हैं और तख़्त की जगह नूर का मिंबर जिससे नूर चमक रहा है मौजूद है थोड़ी देर न गुज़री थी कि मोह़म्मद सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम और उनके दामाद और जानशीन और उनके कुछ फ़र्ज़न्द क़स्र में तशरीफ़ लाए। हज़रत ईसा (अ़.स.) इस्तेक़बाल के लिए आगे बढ़े और ह़ज़रत मोह़म्मद सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से मोआ़नेक़ा किया और ह़ज़रत (स.अ़.) ने फ़रमाया:

ऐ रूहुल्लाह मैं तुम्हारे वसी शमऊ़न की बेटी का रिश्ता अपने बेटे के लिए लाया हूँ।

और उस वक़्त इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ इशारा किया। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने शमऊ़न की तरफ़ देखा और फ़रमाया:

शराफ़त ने तुम्हारी तरफ़ रुख़ किया है इस मुबारक रिश्ते को ख़ुशी ख़ुशी क़बूल कीजिए।

और उन्होंने कहा मैंने क़बूल किया।

उस वक़्त मैने देखा कि पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और ख़ुत्बा पढ़ा और मुझे अपने बेटे की

ज़ौजीयत में दे दिया और फिर ह़ज़रत ईसा और ह़वारीयों को गवाह बनाया। जब मैं ख़ाब से बेदार हुई अपनी जान के डर से ख़ाब को अपने बाबा और दादा से बयान नहीं किया और हमेशा इस राज़ को अपने दिल के संदूक़ में छिपाए रखा।

उस शब के बअ़्द मैं इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के लिए मुज़्तरिब रहती थी। यहाँ तक मैं आब-ओ-ख़ूर से दूर हो गई और धीरे धीरे ग़मज़दा और लाग़र हो गई और फिर बहुत ज़्यादा बीमार हो गई मेरे दादा ने तमाम डाक्टरों को बुलवाया और तमाम डाक्टर मेरे इलाज से मायूस हो गए जब इलाज से मायूस हो गए तो मेरे दादा ने कहा कि ऐ मेरी आँखों की ठंडक अगर तुम्हारी कोई ख़ाहिश है तो मुझे बताओ ताकि उसे पूरी करूँ। मैंने कहा कि ऐ दादा अगर ज़िन्दान का दरवाज़ा असीर मुसलमानों के लिए खोल दें और उन्हें क़ैद-ओ-बन्द की सऊ़बतों से आज़ाद कर दें तो शायद ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और उनकी मादरे गेरामी मुझे शफ़ा दें।

मेरे दादा ने मेरी दरख़ास्त क़बूल कर ली और मैंने भी शफ़ायाबी और अच्छे होने का इज़्हार किया और थोड़ा खाना खाया। मेरा दादा बहुत ख़ुश हुआ और उसके बअ़्द मुसलमान असीरों का बहुत ज़्यादा एह़तेराम करता था।

तक़रीबन चौदह शबें इस वाक़ए़ के बअ़्द गुज़री थी कि फिर मैंने ख़ाब देखा कि पैग़म्बरे इस्लाम (स.अ.) की साहबज़ादी ह़ज़रत फ़ातेमा ज़हरा सलामुल्लाह अ़लैहा और ह़ज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम और बेहिश्ती हूरें मेरी अ़यादत के लिए तशरीफ़ लाई हैं। ह़ज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम ने मेरी तरफ़ रुख़ करके फ़रमाया:

येह सय्यदए नेसाए आ़लम हैं और तुम्हारे शौहर की माँ हैं।

मैंने फ़ौरन ह़ज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अ़लैहा का दामन पकड़ लिया और बहुत रोई और इस बात का शिक्वा किया कि इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम मेरी ज़ेयारत को नहीं आते उन्होंने जवाब दिया:

..... अगर चाहती हो कि तुमसे अल्लाह और ईसा-ओ-मरियम ख़ुश हों और मेरे फ़र्ज़न्द से मुलाक़ात की तमन्ना रखती हो तो अल्लाह की वह्दानियत की शहादत दो और मेरे बाबा ख़ातमुल अंबिया की नबूवत की गवाही दो।

मैंने ह़ज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अ़लैहा के हुक़्म के मुताबिक़ गवाही दी। ह़ज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अ़लैहा ने मुझे गले लगा लिया जो मेरी शफ़ा का सबब हुआ और फ़रमाया:

अब मेरे बेटे ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम का इन्तेज़ार करो उसको तुम्हारे पास भेजूँगी।

जब मैं ख़ाब से बेदार हुई तो मैंने अपने वजूद की गहराई में बहुत ज़्यादा शौक़ का एह़सास किया और ह़ज़रत (अ.स.) से मुलाक़ात की मुश्ताक़ थी। यहाँ तक कि दूसरी शब मैंने इमाम अ़लैहिस्सलाम को ख़ाब में देखा

..... इस शब के बअ़्द से अब तक मैं हर शब ख़ाब में ह़ज़रत (अ.स.) से मुलाक़ात करती थी। बुश्र इब्ने सुलैमान ने पूछा: कैसे असीरों के दरमियान पहुँचीं? जवाब दिया: उन्ही शबों में एक शब इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम को देखा कि ह़ज़रत (अ.स.) फ़रमा रहे हैं:

फ़ुलाँ दिन तुम्हारे दादा क़ैसर मुसलमानों से जंग के लिए लश्कर भेज रहे हैं। तुम ख़िदमत गुज़ारों के कपड़े में चुपके से उन कनीज़ों के साथ फ़ुलाँ रास्ते से आ सकती हो।

मैंने ह़ज़रत की फ़रमाइश पर अ़मल किया, मुसलमान लश्कर को पहले उसकी इत्तेलाअ़् मिल गई और उन्होंने हमें असीर कर लिया और इस

तरह मैं यहाँ तक पहुँच गई, लेकिन अभी तक मैंने किसी से नहीं कहा मैं बादशाहे रूम की पोती हूँ: यहाँ तक कि इस बूढ़े आदमी के हिस्से में ग़नीमत के तौर पर आ गई उसने मेरा नाम पूछा मैंने नहीं बताया और कहा कि नरजिस। उसने जवाब दिया येह कनीज़ों का नाम है।

बुश्र ने कहा कि कितने तअ़ज्जुब कि बात है कि तुम रूमी होने के बावजूद तुम्हारी ज़बान अ़रबी है? मैंने कहा कि मेरे दादा ने मेरी तरबियत के लिए बहुत ज़्यादा कोशिशें कीं और उस औरत की ख़िदमत हासिल किया जो कई ज़बानें जानती थी वोह सुब्ह से शाम तक मेरे पास आती थी और मुझे अ़रबी ज़बान सिखाती थी जिस बेना पर मैं आज अ़रबी ज़बान में गुफ़्तुगू कर रही हूँ।

बुश्र कहता है: जब मैं उनको लेकर इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में सामर्रा गया हज़रत (अ़.स.) ने उनसे दरयाफ़्त किया: **इस्लाम की इज़्ज़त और नसारा की ज़िल्लत और हम अह्लेबैत के शरफ़ को तुमने किस तरह देखा?** उसने जवाब दिया: इस सिलसिले में मैं क्या कहूँ जिसके बारे में मुझसे ज़्यादा आप जानते हैं इमाम (अ़.स.) ने फ़रमाया: **दस हज़ार दीनार अ़ता करूँ या तुम्हें एक ख़ुशख़बरी सुनाऊँ। तुम इसमें किसका इन्तेख़ाब करोगी।**

उन्होंने अ़र्ज़ किया: मुझे ख़ुशख़बरी चाहिए। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: **तुमको एक फ़र्ज़न्द की बशारत देता हूँ जो दुनिया के मशरिक़ और मग़रिब का मालिक होगा और दुनिया को अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ से भर देगा जबकि वोह ज़ुल्म-ओ-जौर से भर चुकी होगी।**

उन्होंने अ़र्ज़ किया: येह बच्चा किस शौहर से होगा? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया: **उस शौहर से जिसका रिश्ता पैग़म्बर (स.अ़.) ने फ़ुलाँ शब, फ़ुलाँ महीने और फ़ुलाँ साल रूमी में तुम्हारे साथ किया था और ईसा इब्ने मरियम और उनके वसी ने तुम्हारी शादी किससे की**

थी। उसने जवाब दिया: आपके फ़र्ज़न्दे अर्जुमन्द से? इमाम हादी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: **उसको पहचानती हो?** कहा: जिस रात ह़ज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अ़लैहा के हाथों पर इस्लाम लाई हूँ, उसके बअ़्द कोई ऐसी शब नहीं आई जिसमें मेरे दीदार के लिए न आए हों।

उस वक़्त इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम ने अपने ग़ुलाम काफ़ूर से फ़रमाया: **मेरी बहन ह़कीमा ख़ातून को मेरे पास बुलाओ।** जब वोह अ़ज़ीम ख़ातून आ गईं तो इमाम (अ.स.) ने फ़रमाया: **ऐ बहन येह वही ख़ातून हैं जिनके बारे में मैंने तुमसे तज़्केरा किया था।** ह़कीमा ख़ातून ने बहुत देर तक उन्हें अपने सीने से लगाए रखा और उन्हें देखकर बहुत ख़ुश हुईं। उस वक़्त इमाम (अ.स.) ने फ़रमाया:

> **"ऐ बहन इसे अपने घर ले जाइए और इस्लामी फ़राएज़-ओ-सुनन की तअ़्लीम दीजिए कि येह मेरे फ़र्ज़न्दे अर्जुमन्द की बीवी और क़ाएमे आले मोह़म्मद अ़लैहिस्सलाम की माँ हैं।"**[1]

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की माँ का मुख़्तलिफ़ नाम ज़िक्र हुआ है मोहम्मद इब्ने ह़मज़ा ने एक ह़दीस के ज़िम्न में इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम से नक़्ल किया है:

> **इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की माँ का नाम मलीका था और बअ़्ज़ दिन सूसन और बअ़्ज़ दिन रेहाना कहते थे और सैक़ल और नरजिस भी उनका नाम था और बअ़्ज़ ह़दीसों में सैक़ल भी वारिद हुआ है।**[2]

---

[1] किताबे ग़ैबत, शैख़ तूसी, स़.१२४

[2] कश्फ़ुल हक़, ख़ातून आबादी, स़.३४

सवाल १४

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम, लक़ब और कुनियत क्या है?

जवाब:

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का असली नाम (म-ह़-म-द) है येह नाम पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने रखा था और फ़रमाया:

उनका नाम मेरा नाम और उनकी कुनियत मेरी कुनियत है।[1]

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की कुनियत: अबुल क़ासिम और अबू सालेह़, अबू अ़ब्दिल्लाह, अबू इब्राहीम और अबू जअ़्फ़र और अबुल ह़सन भी बताई गई है।

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के अल्क़ाब बहुत हैं उनमें से कुछ इस तरह़ हैं।

(१) महदी

इमाम का सबसे मशहूर लक़ब महदी है जो इस्मे मसदर 'हेदायत' से अख़्ज़ किया गया है इसका मअ़्ना अल्लाह के ज़रीए़ हेदायत याफ़्ता होना है। इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम एक ह़दीस के ज़िम्न में फ़रमाते हैं: आँह़ज़रत को महदी इसलिए कहते हैं कि वोह लोगों को गुमगश्ता चीज़ की त़रफ़ हेदायत करेंगे। और इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

---

[1] अलज़ामुन्नासिब, शैख़ हाएरी यज़दी, जि.१, स़.४८३

उनको महदी कहते हैं इसलिए कि वोह एक पोशीदा चीज़ की त़रफ़ हेदायत करेंगे।[1]

(२) क़ाएम

हक़ के लिए खड़े होने वाले। ह़ज़रत रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया: क़ाएम को क़ाएम इसलिए कहा जाता है कि वोह लोगों के नाम भूलने के बअ़्द क़याम करेंगे?[2]

और इमाम जवाद अ़लैहिस्सलाम ने इस सवाल के जवाब में कि उन्हें क़ाएम क्यों कहा जाता है? इमाम ने जवाब दिया: क्योंकि उनका नाम जब लोगों के ज़ेह्न से निकल जाएगा और उसकी इमामत के अक्सर मानने वाले दीने ख़ुदा से पलट जाएँगे तो वोह क़याम करेंगे।[3]

(३) मन्सूर

इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम आयत *'मन क़ोतेला मज़्लूमा '* के ज़ैल में फ़रमाते हैं वोह हुसैन इब्ने अ़ली अ़लैहेमस्सलाम हैं और बाक़ी आयत के बारे में *'फ़क़द जअ़ल्ना ले वलीयेही सुलत़ाना फ़ला युसरिफ़ फ़िल क़त्ले इन्नहू काना मन्सूरा'* फ़रमाते हैं इससे मुराद इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम हैं जिनका नाम इस आयत में मन्सूर है

जैसे अल्लाह तआ़ला ने अह़मद और मोह़म्मद को मह़मूद और ईसा को मसीह़ कहा है।[4]

---

[1] इस्बातुल हुदा, शैख़ हुर्रे आ़मेली, जि.७, स.११० और १६९

[2] मआ़निल अख़्बार, शैख़ सदूक जि.१, स.४८३

[3] कमालुद्दीन,शैख़ सदूक़, स़.६५

[4] सूरए बनी इस्राईल, आयत ३३

(४) मुन्तज़र

इमाम जवाद अ़लैहिस्सलाम से पूछा गया: क्यों उनको मुन्तज़र कहा जाता है? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

> **क्योंकि वोह एक तूलानी मुद्दत तक ग़ैबत में रहेंगे और उनके चाहने वाले उनके ज़हूर का इन्तेज़ार करेंगे और जिनके दिलों मे शक है वोह इन्कार करेंगे.....**[1]

(५) बक़ीयतुल्लाहः

रवायत में है कि जब वोह ज़हूर करेंगे कअ़्बे की त़रफ़ पुश्त करेंगे और तीन सौ तेरह मुख़्लिस उनके पास जमअ़् होंगे और सबसे पहले जो चीज़ ज़बान पर जारी करेंगे वोह येह आयत होगी

बक़ीयतुल्लाहे ख़ैरुल्लकुम इन कुन्तुम मोअ़्मेनीन[2]

और फिर फ़रमाएँगे मैं बक़ीयतुल्लाह, और हुज्जते ख़ुदा और अल्लाह की त़रफ़ से तुम्हारा ख़लीफ़ा हूँ। पस तमाम सलाम करने वाले लोग उन्हें *अस्सलामो अ़लैकुम या बक़ीयतल्लाहे फ़ी अर्ज़ेह* कह कर सलाम करेंगे।[3]

(६) हुज्जतुल्लाह

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम बहुत सी दुआओं और ह़दीसों में इसी लक़ब से याद किए गए हैं। और आ़म त़ौर से मोह़द्देसीन ने इस लक़ब को ज़िक्र किया है और इसके बावजूद कि सारे अइम्मा इस लक़ब में शरीक हैं और

---

[1] कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, शैख़ स़दूक स़.३७८

[2] सूरए हूद, आयत ८६

[3] मुन्तहल आमाल, शैख़ अ़ब्बास कुम्मी, जि.२, स.२८६

तमाम के तमाम मख़्लूक़ात पर अल्लाह की हुज्जत हैं लेकिन येह लक़ब इमाम से इतना मख़्सूस है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के लिए बग़ैर क़रीना और दलील के इस्तेअ़्माल होता है और बअ़्ज़ लोग कहते हैं: आँहज़रत का लक़ब हुज्जतुल्लाह ग़लबा के मअ़्ना में है या अल्लाह की हुकूमत मख़्लूक़ात के मअ़्ना में है अगरचे येह दोनों इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़रीए ज़ाहिर होगी और इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की अंगूठी पर '*अना हुज्जतुल्लाह*' नक़्श है।[1]

दूसरे अल्क़ाब

ख़लफ़े सालेह, शरीद, ग़रीम, मोअमल, मुन्तज़र, मुन्तक़िम, माए मईन, वलीयुल्लाह, साहेबुल अम्र, साहेबुज़्ज़मान, वग़ैरह है इससे ज़्यादा वज़ाहत के लिए मुन्तहल आमाल और बेहारुल अनवार और सिलसिले की दूसरी किताबों को मुलाहेज़ा किया जा सकता है।

---

[1] मुन्तहल आमाल, शैख़ अब्बास क़ुम्मी, जि.२, स.२८७